समन्वित ग्रामीण विकास के केन्द्र व उनका वितरण एक शोधपरक अध्ययन (नांवा तहसील के विशेष संदर्भ में)

Centers of Integrated Rural Development and Their Distribution is a Research Study (With Special Reference to Nawa Tehsil)

Paper Submission: 02/07/2021, Date of Acceptance: 22/07/2021, Date of Publication:24/07/2021

विजय कुमार
पूर्व शोधार्थी,
भूगोल विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान, भारत

Abstract

प्रादेशिक विकास के सन्दर्भ में विकास की धारणा से तात्पर्य उस संकल्पना से है, जिसका मूल्य धनात्मक है तथा जिसका मुख्य उद्देश्य लोगों के रहन-सहन के स्तर एवं मानव कल्याण की सामान्य दशाओं को बढ़ावा देना है। विकास न तो वर्ग तटस्थ होता है, न ही किसी प्रदेश के प्रत्येक भाग में समरूपता से दिखाई पड़ता है। कुछ प्रदेश विकास के उच्च स्तर को प्राप्त कर लेते हैं परन्तु कुछ प्रदेश उस स्तर को प्राप्त नहीं कर पाते हैं। इस प्रकार सामाजिक एवं प्रादेशिक विषमता का जन्म होता है। इस विषमता के लिए विकास के तीन आधारभूत प्रांचल प्राकृतिक पर्यावरणए प्रौद्योगिकी एवं संस्थाओं का व्यवहार उत्तरदायी होता है। अतः आर्थिक विकास प्राकृतिक पर्यावरण, प्रौद्योगिकी एवं संस्थाओं के मध्य अनुरूपी अन्तः क्रिया का परिणाम होता है।

The concept of development in the context of regional development refers to the concept which has positive value and whose main objective is to promote the standard of living of the people and general conditions of human welfare. Development is neither class neutral, nor is it seen uniformly in every part of a region. Some regions achieve high level of development but some regions do not achieve that level. In this way social and regional inequality is born. The three basic parameters of development, natural environment, technology and behavior of institutions are responsible for this disparity. Thus, economic development is the result of the corresponding interaction between the natural environment, technology and institutions.

मुख्य शब्दः समन्वित ग्रामीण विकास, प्रादेशिक विकास, मानवीय कल्याण, प्राकृतिक विकास, विकास केन्द्र।

Integrated Rural Development, Regional Development, Human Welfare, Natural Development, Development Centre.

प्रस्तावना

प्रारम्भ में भारतीय नियोजन का स्तर राष्ट्र तथा राज्य रहे हैं। बाद में जिला एवं विकास खण्डों को भी नियोजन इकाई के रूप में लिया गया। 1978-83 काल में विकास खण्ड के नियोजन का प्रादुर्भाव हुआ। विकास खण्ड का एक गाँव, वास्तव में, योजनाओं के कार्यान्वयन की इकाइयां है। विकास खण्ड के स्तर पर पंचायत समितियाँ विकास कार्यों की देखरेख करती हैं। योजना आयोग द्वारा विकास खण्ड स्तर पर नियोजन के लिए "दांतेवाला कमेटी" का गठन छठी पंचवर्षीय योजना में निर्धारित ग्रामीण विकास के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु किया गया। जिसने 12 क्रियाओं की संस्तुति की थी। परन्तु विकास खण्ड स्तर पर नियोजन की सबसे बड़ी समस्या यह है कि इस स्तर पर नियोजन की कोई संस्था नहीं है। अतः लघु स्तर पर नियोजन के लिए आवश्यक है कि इसके लिए उपर्युक्त इकाईयाँ बनाई जाये चाहे वह गाँवों का एक समूह ही क्यों न हो। इन समूहों में से कुछ विकास केन्द्रों का चयन करके उनका विकास किया जाए। विकास केन्द्र किसी प्रदेश में स्थित ऐसे केन्द्र या अधिवास है जिनमें अपने चारों ओर के क्षेत्रों का विकास करने कीसामर्थ्य होती है।

प्रादेशिक नियोजन के उद्धेश्य से विकास केन्द्र के रूप में ऐसे सेवा केंद्रों का चयन किया जाता है जिनके प्रभाव से उनके चारों ओर के अविकसित क्षेत्र भी विकसित होने लगते हैं।

विकास केंद्र विकास खण्ड स्तर पर सुक्ष्म - स्तरीय नियोजन का संक्रियात्मक कार्यात्मक प्रतिफल है। अनुसंधानों से यह परिणाम प्राप्त हुए हैं कि ऐसे कार्यात्मक संगठनों की उपस्थिति की सम्भावना बहुत अधिक है जो ऐसे ग्राम्य समूहों से मिलकर बनते है जिनमें पारस्परिक घनिष्ठ कार्यात्मक सम्बन्ध होता है। तथा जो सभी व्यवहारिक उद्देश्यों के लिए एक संगठन गठित करते हैं।

उपर्युक्त कार्यात्मक संगठन के संगठित गाँवों के मध्य का केन्द्रीय गाँव ऐसी उच्च क्रम की सेवायें उपलब्ध कराता है जिनकी लोगों द्वारा आवश्यकता महसूस की जाती है। ये सेवायें ऐसी होती है जिन्हें कार्यात्मक संगठन की सम्पूर्ण आबादी का सहयोग प्राप्त होता है। तदनुरूप इन कार्यात्मक संगठनों से एक उप क्षेत्र का निर्माण होगा, जिसका एक केन्द्रीय बिन्दु भी होगा। इस उप-क्षेत्रीय केन्द्रीय बिन्दु को सेवा केन्द्र की संज्ञा दी जाती है जो कि केन्द्रीय गाँव की तुलना में अधिक उच्च क्रम का होगा। यह सेवा केन्द्र केन्द्रीय गाँव द्वारा उपलब्ध करायी गयी सेवाओं के अलावा कुछ ऐसी सेवाऐं भी उपलब्ध करायेगा जो केन्द्रिय गाँव की सेवाओं की तुलना में अधिक जटिल होंगी। इस प्रकार पदानुक्रम पद्धति पर आधारित उप-क्षेत्रों का उत्तरोत्तर बढ़ता भौगोलिक क्षेत्र और जनसंख्या क्षेत्र तथा सेवा केन्द्रों के आधार पर उपलब्ध होने वाली कार्यात्मक जटिलता बढ़ती ही जायेगी। नांवा तहसील एक अल्प विकसित संक्रामी है। जहाँ वैज्ञानिक अध्ययन के आधार पर अनेक विकास की योजनाएं बनाना आवश्यक है। नांवा तहसील में सिंचाई सुविधायें अच्छी है। केन्द्रों के आधार पर सम्भाव्य परिप्रेक्ष्य के केन्द्र समस्त क्षेत्र को सेवायें प्रदान करते हैं। इस अध्ययन में केन्द्रीय ग्राम अथवा सेवा केन्द्र जैसे अधिक अर्थपूर्ण शब्दों का प्रयोग अध्ययन क्षेत्र के विकास की ओर अधिक ध्यान देने को प्रेरित करता है। सेवा केन्द्रों की पहचान तथा योजना का कार्य अधिकांश वृद्धि केन्द्रों के रूप में उभारने हेतु किया गया है।

विकास या वृद्धि केन्द्र, सेवा केन्द्रों का एक तार्किक विस्तार है जो बस्ती सांतत्य की कार्यात्मक विशिष्टाओं पर आधारित है। इसके एक तरफ आश्रित बस्ती व दूसरी तरफ वृद्धि केन्द्र अवस्थित होता है। इनके मध्य केन्द्रीय गाँवों व सेवा केन्द्रों का क्रम विन्यास पाया जाता है। इस प्रकार बस्ती सातत्य की प्रकृति का ज्ञान आवश्यक है। इस पूर्व ज्ञान से बस्ती को आश्रित बस्ती, केन्द्रीय ग्राम सेवा केन्द्र तथा विकास का वृद्धि केन्द्र आदि की श्रेणी में रखने में सहायता प्राप्त होती है।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत शोध अध्ययन क्षेत्र राजस्थान के नागौर जिले की नांवा तहसील है। तहसील की कुल जनसंख्या 336963 है। इसमें 79.57 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों की है। नांवा तहसील, जिले की पिछड़ी तहसीलों में गिनी जाती है। ये तहसील अल्प विकसित संक्रामी क्षेत्र है। इसमें समन्वित विकास हेतु समस्याओं को खोज कर वैज्ञानिक अध्ययन के आधार पर विकास कार्यक्रम एवं योजनाएं बनाना है। इस क्षेत्र के सर्वांगिण विकास की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए इस क्षेत्र का चुनाव किया जाना मेरे शोध का मुख्य लक्ष्य है। वर्तमान में विभिन्न क्षेत्रों में वैज्ञानिक विकास होने पर भी कृषि, ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है जो मुख्यतः वहां के भौगोलिक परिवेश पर निर्भर होती है। अतः अध्ययन क्षेत्र के विकास के सन्दर्भ में भौगोलिक वातावरण के तत्वों का अध्ययन करना महत्वपूर्ण हो जाता है। नांवा तहसील राजस्थान नागौर जिले की एक प्रशासनिक इकाई है, जो नागौर जिले के पूर्वी भाग में स्थित है। इसकी भौगोलिक स्थिति 27°22‘38“व 26°53‘35“ उत्तरी अक्षांशों तथा 75°21‘57“ व 75°03‘18“ पूर्वी देशान्तरों के मध्य है। इसके उत्तर व उत्तर-पूर्व में सीकर जिला, उत्तर-पश्चिम में डीडवाना तहसील, दक्षिण-पश्चिम में मकराना तहसील व परबतसर तहसील, दक्षिण- पूर्व में जयपुर जिला स्थित है। यह तहसील 152186 वर्ग किमी. क्षेत्र पर विस्तृत है तथा तहसील की वर्ष 2001 में कुल जनसंख्या 336963 है। यहाँ की सम्पूर्ण जनसंख्या में ग्रामीण जनसंख्या 268146 है तथा शहरी जनसंख्या 68817 है। जनसंख्या घनत्व 221 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। तहसील में सम्पूर्ण ग्रामों की संख्या 193 है।

FIG. NO. 1.1

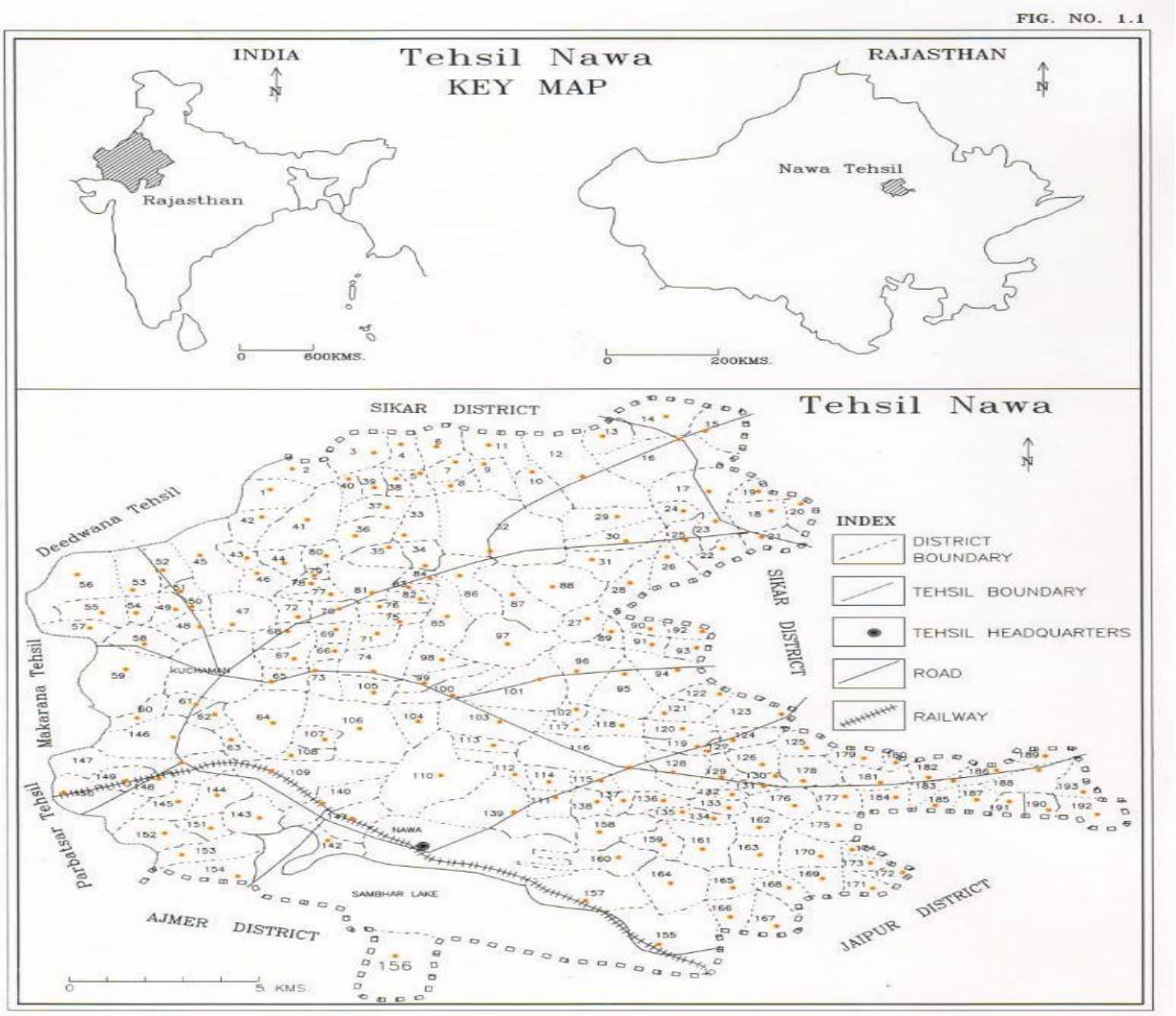

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. अध्ययन क्षेत्र के विकास केन्द्रों का अध्ययन करना ।
2. अध्ययन क्षेत्र के विकास केन्द्रों के निर्धारण में प्रयुक्त विधियों का अध्ययन करना।
3. अध्ययन क्षेत्र के कार्यात्मक पदानुक्रम की माप विधियों का अध्ययन करना।
4. अध्ययन क्षेत्र में विद्यमान सेवा केन्द्रों का विश्लेषणकरना।

विधि तंत्र एवं आँकड़ों का संकलन - प्रस्तुत शोध पत्र में आँकड़ों का संकलन प्राथमिक व द्वितीयक प्रकार से किया गया है, प्राथमिक आँकड़ें प्रश्नावली, साक्षात्कार व अनुसूची के माध्यम से लिये गये हैं तथा द्वितीयक प्रकार के आँकड़ों का संकलन केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकार के द्वारा प्रकाशित व अप्रकाशित पत्र, पत्रिकाओं तथा सम्बन्धित शोध पत्रों से लिया गया है। शोध पत्र में आवश्यकतानुसार सारणीयन तथा उनका विश्लेषण कर आरेख, रेखाचित्र व मानचित्रों द्वारा स्पष्ट एवं तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

साहित्यिावलोकन

एल.एस. भट्ट ने 1972 में करनाल जिले के नगरीय विकास प्रतिरूप पर भारतीय भूगोल परिषद् में अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया, जिसमें करनाल जिले के नगरीय सुख-सुविधाओं यथा शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन, संचार, बाजार तथा जलापूर्ति आदि का उल्लेख किया।

बी.सी. मेहता ने 1978 में प्रादेशिक जनसंख्या वृद्धि पर राजस्थान के विशेष संदर्भ में एक शोध पुस्तक का प्रकाशन किया, जिसमें राजस्थान की क्षेत्रीय विषमताओं जैसे- जनसंख्या, साक्षरता, लिंगानुपात, घनत्व वृद्धि दर तथा उद्योगों का उल्लेख किया गया।

आर. एन. दुबे ने 1988 में आर्थिक विकास एवं नियोजन पुस्तक का प्रकाशन नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई

दिल्ली से किया, जिसमें भारत देश के आर्थिक विकास तथा प्रादेशिक नियोजन के सिद्धांतों का उल्लेख किया गया।

अध्ययन क्षेत्रों के विकास केन्द्रों का स्वरूप - नियोजन की पारिभाषिक शब्दावली में विकास के स्तर के आधार पर कम से कम चार विकास प्रदेशों सीमान्त प्रदेश, अधोमुखी संक्रामी प्रदेश, ऊर्ध्वमुखी संक्रामी प्रदेश तथा क्रोड प्रदेश सम्मिलित है।

सीमान्त प्रदेश का क्षेत्र विस्तृत है। यहाँ सामाजिक-आर्थिक क्रियाकलाप नगण्य है। अधोमुखी संक्रामी प्रदेशों में कुछ न कुछ सामाजिक-आर्थिक अवसंरचना मिलती है। परन्तु क्रियाकलापों के ध्रुरवीकरण के कारण अपने विकास के स्तर को बनाये रखने में ऐसे क्षेत्र असक्षम होते हैं।

परिणामस्वरूप ऐसे क्षेत्र अपना महत्व खो चुके हैं। ऊर्ध्वमुखी संक्रामी प्रदेशों में सामाजिक-आर्थिक क्रियाकलापों का विकसित जाल पाया जाता है। परन्तु यह जाल मध्यम तथा बड़े पैमाने के उद्योगों को आकर्षित करने की स्थिति में नहीं होता है। क्रोड प्रदेश वस्तुतः अधिक विकसित तथा औद्योगिक समूहों वाले महानगरीय क्षेत्र होते हैं। जिनमें आर्थिक और सामाजिक दोनों ही तरह के क्रियाकलापों का उच्च संकेन्द्रण पाया जाता है तथा ऐसे प्रदेश उपरोक्त तीनों विकास प्रदेशों के परिव्यय पर विकास करते हैं।

आश्रित ग्राम, केन्द्रीय ग्राम, सेवा केन्द्र, विकास केन्द्र तथा क्षेत्रीय नगर एक दूसरे से सड़क, तेज गति यातायात, तार एवं दूरभाष तथा संचार के अन्य साधनों द्वारा अन्तर्सम्बन्धित होंगे।

विकास केन्द्रो के निर्धारण में प्रयुक्त विधियाँ

अध्ययन क्षेत्र में प्रयुक्त विधियों द्वारा कार्यों के आधार पर पदानुक्रम व ग्राम सेवा केन्द्रों के पदानुक्रम का निर्धारण तथा ग्राम की संक्रियात्मक विशेषताओं का अध्ययन किया जाता है।

अध्ययन क्षेत्र में कार्यों की प्रकृति के आधार पर कार्यों की संख्या न्यूनतम (दोहरी) जनसंख्या स्तर को सामाजिक सुविधाओं की स्थापना हेतु सम्मिलित किया जाता है।

संयुक्त केंद्रीयता सूचकांक एवं पदानुक्रम की माप विधि

गाँवों के कार्यों और उनके पदानुक्रम की संयुक्त केन्द्रीयता सूचकांक की माप के लिये तीन विधियां प्रयोग में ली गई है।

1. स्केलो ग्राफ विश्लेषण विधि
2. जनसंख्या न्यूनतम स्तर एवं केन्द्रीय स्थानों और कार्यों की कोटि निर्धारण विधि
3. कार्यों के पदानुक्रम के आधार पर गाँवों की कोटि निर्धारण विधि

पदानुक्रम, गाँवों की संयुक्त केन्द्रीयता पर आधारित होता है। संयुक्त केन्द्रीयता से हमारा तात्पर्य उस गाँव में पाये जाने वाले केन्द्रीय कार्यों की संख्या एवं विशेषता से है। जबकि केन्द्रीय कार्य वे कार्य हैं जो अपनी प्रकृति व स्वभाव के कारण कुछ ही गाँवों में पाये जाते हैं। ये कार्य प्रायः असर्वग होते हैं। ये केन्द्रीय कार्य सभी गाँवों में एक से अनुपात में नहीं पाये जाते हैं, और न सभी बस्तियाँ एक से स्तर के कार्य करती हैं। इन केन्द्रीय कार्यों की विशेषता व गुणों पर दो कारकों का प्रभाव पड़ता है- प्रथम बस्ती में पाये जाने वाले कार्यों की संख्या एवं प्रकार तथा द्वितीय इन कार्यों का स्तर।

उपरोक्त विभिन्न विधियों में सूत्रों का प्रयोग किया गया है। सूत्रों द्वारा विशिष्ट कार्यों के न्यूनतम जनसंख्या स्तर पर अंकमान प्राप्त करने हेतु तथा कार्यात्मक सूचकांक, केन्द्रीयता सूचकांक, संयुक्त केन्द्रीयता सूचकांक प्राप्त करने हेतु प्रयोग किया गया है।

जिन गाँवों में कार्यों की संख्या अधिक है, वहाँ पर उच्च स्तर के कार्य ही विकसित है और इस प्रकार उस गाँव का पद भी ऊँचा हैं। छोटे गाँव कम केन्द्रीय कार्य करने वाले होते हैं तथा उनके कार्यों का स्तर तथा पद अपेक्षाकृत छोटा होता है। इस प्रकार गाँवों का पदानुक्रम, केन्द्रीय कार्यों के पदानुक्रम से गहरा सम्बन्ध रखता है।

एक केन्द्रीय कार्य के अन्तर्गत अनेक उप-विभाग पाये जा सकते है। जैसे शिक्षा कार्य, प्राथमिक स्तर, उच्च प्राथमिक विद्यालय स्तर, माध्यमिक विद्यालय स्तर व उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्तर पर होता है। इसमें उच्च कार्य को रखने वाला गाँव का पद भी ऊँचा होगा। जैसे उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्तर पर कार्य करने वाला गाँव प्राथमिक स्तर पर या उच्च प्राथमिक विद्यालय स्तर पर कार्य करने वाले गाँव से बड़ा होगा। अतः उसका पद भी ऊँचा होगा। किसी कार्य की बार-बार आवृत्ति उस कार्य के महत्व के स्तर को गिरा देती है।

कार्यात्मक पदानुक्रम की माप विधियाँ - कार्यात्मक पदानुक्रम के माप की, कार्यों के सापेक्षिक महत्व के सन्दर्भ में व्याख्या की जा सकती है। उदाहरणार्थ एक प्राथमिक विद्यालय उच्च प्राथमिक विद्यालय की अपेक्षा कम महत्व रखता है और एक उच्च प्राथमिक विद्यालय माध्यमिक विद्यालय की अपेक्षा कम महत्व रखता है। जितना कार्यात्मक पदानुक्रम का स्तर ऊँचा होगा, उतना ही उस स्थान का जहाँ यह कार्य स्थित है, संयुक्त केन्द्रीयता सूचकांक ऊँचा होगा। केन्द्रीय स्थान का महत्व वहां पर पाये जाने वाले कार्यों द्वारा प्रभावित होता है। एक ग्राम में एक विशेष स्तर पर जितने कार्य पाये जाते हैं, उसी स्तर पर कम कार्य
पाये जाने वाला गाँव कम महत्व का होगा। यदि गाँव मे कार्यों की संख्या लगभग समान हो लेकिन गाँव में पाये जाने वाले कार्यों का

स्तर विभिन्न हो, तब वह गाँव जहां उच्च क्रम के कार्य पाये जाते है, उस गाँव की अपेक्षा अधिक महत्व रखेगा। जहाँ संख्या में समान लेकिन निम्न क्रम के कार्य पाये जाते हैं। यह पर्यवेक्षण केन्द्रीय स्थान सिद्धान्त की अवधारणा की संक्रियात्मक विशेषताओं पर आधारित है।

सामान्य पर्यवेक्षण यह है कि कार्यात्मक पदानुक्रम के निश्चित स्तर के चारों ओर ग्राम्य समूह में विभिन्न कार्य एकत्रित हो जाते है। अतः एक ऐसा स्थान जहां माध्यमिक विद्यालय स्थापित है वहाँ पर एक नियमित बस स्टॉप या डाकघर या सहकारी बैंक की शाखा जन्म ले लेती है।

नांवा तहसील के अन्तर्गत गाँवों के पदानुक्रम निर्धारण लिये केन्द्रीय कार्यों की संख्या 21 है। कार्यात्मक पदानुक्रम के स्तर की पहचान कार्यों के न्यूनतम स्तर के आधार पर की है। ग्राम्य समूह के अन्तर्गत प्रत्येक गाँव में पाये जाने वाले कार्यों के आधार पर प्रत्येक गाँव का संयुक्त केन्द्रीयता सूचकांक प्राप्त किया है। संयुक्त केन्द्रीयता सूचकांक के आकार के आधार पर तीन समूहों को निर्धारित किया है। ये तीन समूह कार्यात्मक पदानुक्रम के तीन स्तरों का निर्माण करते हैं।

पदानुक्रम के निम्नतम समूह में 4.86 से कम संयुक्त केन्द्रीयता सूचकांक पाया जाता है। पदानुक्रम के दूसरे समूह में 4.86 से 149 तक संयुक्त केन्द्रीयता सूचकांक तथा तीसरे समूह में 1.49 से अधिक संयुक्त केन्द्रीयता सूचकांक पाया जाता है।

तालिका

कार्यात्मक जनसंख्या न्यूनतम स्तर एवं कार्य का अंकमान (2011)

क्रं सं.	कार्य का नाम	जनसंख्या न्यूनतम स्तर	कार्य का अंकमान
1.	पक्की सड़क	92	0.46
2.	प्राथमिक विद्यालय	92	0.46
3.	घरेलू बिजली	92	0.46
4.	हेण्डपम्प	108	0.54
5.	कुऐं	182	0.90
6.	नलकूप	224	1.11
7.	बस स्टॉप	229	1.14
8.	प्राथमिक स्वास्थ्य उप केन्द्र	392	1.94
9.	परिवार नियोजन केन्द्र	392	1.94
10.	दूरभाष सेवा	458	2.27
11.	उच्च प्राथमिक विद्यालय	494	2.45
12.	डाकघर	537	2.67
13.	कृषि सहकारी समिति	595	2.95
14.	अकृषि सहकारी समिति	595	2.95
15.	अन्य सहकारी समिति	595	2.95
16.	माध्यमिक विद्यालय	942	4.67
17.	बीज, उर्वरक, कीटनाशक वितरण केन्द्र	942	4.67
18.	सहकारी वाणिज्यिक बैंक	942	4.67
19.	वाणिज्यिक बैंक	1146	5.69
20.	प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र	2073	1029
21.	तारघर	2231	11.07
22.	उच्च माध्यमिक विद्यालय	2994	14.86
23.	प्रसूति गृह	3808	18.89

स्त्रोतः शोधार्थी स्वयं द्वारा प्राथमिक आंकड़ों के आधार पर।

अध्ययन क्षेत्रों में सेवा केन्द्रों का विश्लेषणात्मक अध्ययन - सेवा केन्द्र कार्यात्मक पदानुक्रम के स्तरों के परिणाम होते हैं। पदानुक्रमों की पहचान संयुक्त केन्द्रीयता सूचकांक के आधार पर है। संयुक्त केन्द्रीयता सूचकांक की गणना कार्यात्मक सूचकांक और केन्द्रीयता सूचकांक को गुणा करने पर प्राप्त हुयी है। जबकि कार्यात्मक सूचकांक और केन्द्रीयता सूचकांक की गणना अध्ययन क्षेत्र के विचाराधीन सभी कार्यों के आधार पर की गई है। अध्ययन क्षेत्र को निम्नलिखित 11 सेवा केन्द्रों में विभक्त किया गया है

घाटवा सेवा केन्द्र

अध्ययन क्षेत्र में घाटवा सेवा केन्द्र तहसील के शीर्ष भाग में स्थित है। यह सेवा केन्द्र कुचामन दाँता व सीकर दाँता सड़क मार्ग पर अन्य सेवा केन्द्रों से सड़कों द्वारा जुड़ा हुआ है। इस सेवा केन्द्र के उत्तर-पूर्व में परवेड़ी व चावण्डिया सेवा केन्द्र तथा दक्षिण-पूर्व में पांचवा सेवा केन्द्र स्थित है। यहाँ एक पुलिस थाना स्थित है।

घाटवा सेवा केन्द्र में शिक्षा सेवाओं में 6 प्राथमिक विद्यालय, 4 उच्च प्राथमिक विद्यालय, 1 माध्यमिक विद्यालय, 1 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, 324 नलकूप, 1 डाकघर, 1 तारघर, 60 दूरभाष 1 सहकारी वाणिज्यिक बैंक, 1 बीज, उर्वरक, कीटनाशक वितरण केन्द्र व 1 कृषि सहकारी समिति, 90 छोटी दुकानें स्थितहै। यहाँ सभी जगहों पर विद्युतीकरण व पक्की सड़क सुविधा है।

इस सेवा केन्द्र का संयुक्त केन्द्रीयता सूचकांक सर्वाधिक 553.17 है। ये 2.742 लघुगणक मान के साथ तहसील के अन्य सभी गाँवों से गाँव पदानुक्रम के आधार पर प्रथम स्तर के सर्वोच्च स्तर पर है। इस सेवा केन्द्र का क्षेत्रफल 1641 हेक्टेयर है जो 5327 जनसंख्या की सेवा करता है।

भुणी सेवा केन्द्र

भुणी सेवा केन्द्र तहसील के मध्य स्थित है। यह सेवा केन्द्र कुचामन - दाँता सड़क मार्ग, कुचामन रिंगस सड़क मार्ग के संधि स्थल पर स्थित है। यह सेवा केन्द्र नांवा-दाँता सड़क मार्ग से भी जुड़ा हुआ है।

भुणी सेवा केन्द्र में 1 प्राथमिक विद्यालय, 1 उच्च प्राथमिक विद्यालय, 488 नलकूप, 1 दूरभाष 50 छोटी दुकानें स्थित है। यहां सभी स्थानों पर विद्युतीकरण व पक्की सड़क सुविधाएँ तथा यातायात की सुविधा उपलब्ध है।

इस सेवा केन्द्र का संयुक्त केन्द्रीयता सूचकांक 28846 व लघुगणक मान 2.460 है अतः यह गाँव पदानुक्रम के प्रथम स्तर के द्वितीय स्थान पर स्थित है। इस सेवा केन्द्र का क्षेत्रफल 1707 हैक्टेर व जनसंख्या 2833 है।

परवेड़ी सेवा केन्द्र

परवेड़ी सेवा केन्द्र तहसील के शीर्ष मध्य स्थित है। इस सेवा केन्द्र के पूर्व में चावण्डिया सेवा केन्द्र व दक्षिण में पांचवा सेवा केन्द्र स्थित है।

परवेड़ी सेवा केन्द्र पर 3 प्राथमिक विद्यालय, 1 उच्च प्राथमिक विद्यालय, 533 कुऐं, 1 डाकघर, एक दूरभाष, 1 सहकारी वाणिज्यिक बैंक, 30 छोटी दुकानें स्थित है। इस सेवा केन्द्र पर पक्की सड़क व विद्युतीकरण सेवाएँ उपलब्ध है।

परवेड़ी सेवा केन्द्र का संयुक्त केन्द्रीयता सूचकांक 267.69 व लघुगणक मान 2.427 है तथा ये गाँव पदानुक्रम के प्रथम स्तर में तृतीय स्थान पर स्थित है। इस सेवा केन्द्र का क्षेत्रफल 1425 हेक्टेयर व जनसंख्या 2915 है।

सरगोठ साथ पदमपुरा

सरगोठ साथ पदमपुरा सेवा केन्द्र तहसील के दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। इस सेवा केन्द्र के उत्तर- पश्चिम में कुचामन सिटी कस्बा, पूर्व में गोगोट सेवा केन्द्र, दक्षिण-पूर्व में मिठड़ी सेवा केन्द्र स्थित है। यह सेवा केन्द्र कुचामन - नावां कच्चे सड़क मार्ग पर स्थित है।

इस सेवा केन्द्र में 1 प्राथमिक विद्यालय, 1 उच्च प्राथमिक विद्यालय, 1 प्राथमिक स्वास्थ्य उप केन्द्र, 477 नलकूप, 1 डाकघर, 1 तारघर, 2 दूरभाष, 1 वाणिज्यिक बैंक, 20 छोटी दुकानें स्थित है। सभी जगह पक्की सड़क व विद्युत सुविधाहै।

इसका संयुक्त केन्द्रीयता सूचकांक 223.34 व लघुगणक मान 2371 है। इसका क्षेत्रफल 2159 हेक्टेयर व जनसंख्या 2256 है।

लुणवा सेवा केन्द्र

लुणवा सेवा केन्द्र नांवा तहसील में दक्षिण-पूर्व में स्थित है। इसके उत्तर-पूर्व में देवली कला सेवा केन्द्र स्थित है। इसके सुदूर पश्चिम में नांवा सिटी कस्बा स्थित है।

लूणवा सेवा केन्द्र में 4 प्राथमिक विद्यालय, 1 उच्च प्राथमिक विद्यालय, 1 माध्यमिक विद्यालय, 1 प्राथमिक स्वास्थ्य उप केन्द्र, 10 कुऐं 90 विद्युतीकृत कुऐं, 1 डाकघर, 1 तारघर, 10 दूरभाष 1 सहकारी वाणिज्यिक बैंक 1 बीज उर्वरक, कीटनाशक वितरण केन्द्र, 1 कृषि सहकारी समिति 11 छोटी दुकानें स्थित है। यहां पर पक्की सड़क व विद्युत सेवाएं उपलब्ध है।

लूणवा सेवा केन्द्र का संयुक्त केन्द्रीयता सूचकांक 216.113 है। इस सेवा केन्द्र का क्षेत्रफल 4099 व जनसंख्या 284.36 है।

पांचवा सेवा केन्द्र

यह सेवा केन्द्र अध्ययन क्षेत्र में उत्तर-पश्चिम मध्य में स्थित है। यह सेवा केन्द्र कुचामन-सीकर व कुचामन-दाँता सड़क मार्ग पर स्थित है।

पांचवा सेवा केन्द्र पर 5 प्राथमिक विद्यालय, 2 उच्च प्राथमिक विद्यालय, 1 माध्यमिक विद्यालय, 20 नलकूप, 358 विद्युतीकृत कुऐं, 1 डाकघर, 90 दूरभाष 1 सहकारी वाणिज्यिक बैंक, 1 कृषि सहकारी समिति 1 अकृषि सहकारी समिति, 1 बीज उर्वरक, कीटनाशक वितरण केन्द्र, 9 छोटी दुकानें स्थित है। यहां पर पक्की सड़क व विद्युत सेवाऐं उपलब्ध है।

पांचवा सेवा केन्द्र का संयुक्त केन्द्रीयता सूचकांक 183.87 है तथा इसका क्षेत्रफल 1226 व जनसंख्या 3728है।

गोगोट सेवा केन्द्र

गोगोट सेवा केन्द्र तहसील में मध्य में स्थित है। इसके पूर्व में भूणी सेवा केन्द्र पश्चिम में सरगोठ साथ पदमपुरा सेवा केन्द्र व दक्षिण में मिठड़ी सेवा केन्द्र स्थित है।

गोगाट सेवा केन्द्र पर 1 प्राथमिक विद्यालय, 556 नलकूप, 1 दूरभाष 8 छोटी दुकानें स्थित है। यहाँ पक्की सड़क व विद्युत सेवाएँ उपलब्ध है।

इस सेवा केन्द्र का संयुक्त केन्द्रीयता सूचकांक 183.63 है। तथा इसका क्षेत्रफल 1137 हेक्टेयर व जनसंख्या 1583है।

चावण्डिया सेवा केन्द्र

चावण्डिया सेवा केन्द्र अध्ययन क्षेत्र में शीर्ष पर स्थित है। इसके पश्चिम में परवेड़ी सेवा केन्द्र है व दक्षिण में पांचवा सेवा केन्द्र स्थित है।

चावण्डिया सेवा केन्द्र में 2 प्राथमिक विद्यालय, 523 कुऐं, 1 डाकघर, 7 छोटी दुकानें स्थित है। यहाँ सभी जगह पक्की सड़क व विद्युत सेवाएँ उपलब्ध है।

इस सेवा केन्द्र का संयुक्त केन्द्रीयता सूचकांक 169.29 तथा क्षेत्रफल 974 हेक्टेयर तथा जनसंख्या 1915 है।

मिठड़ी सेवा केन्द्र

यह सेवा केन्द्र अध्ययन क्षेत्र में दक्षिण-पश्चिम कोने में स्थित है। यह सेवा केन्द्र तहसील का एक मात्र सेवा केन्द्र है जो जोधपुर-जयपुर रेल्वेमार्ग पर स्थित है। इसके अलावा यह कुचामन नांवा सड़क मार्ग पर भी स्थित है।

मिठड़ी सेवा केन्द्र मे 6 प्राथमिक विद्यालय, 2 उच्च माध्यमिक विद्यालय, 1 माध्यमिक विद्यालय, 1058 विद्युतीकृत कुएं, 1 डाकघर 35 दुरभाष, 1 सहकारी वाणिज्यिक बैंक, 1 कृषि सहकारी समिति, 7 छोटी दुकानें स्थित है।

इस सेवा केंद्र का संयुक्त केंद्रीयता सूचकांक 168.57 है और इसका क्षेत्रफल 2971 हेक्टेयर व जनसंख्या 8233 है।

मीण्डा सेवा केन्द्र

मीण्डा सेवा केन्द्र अध्ययन क्षेत्र के सुदुर पूर्वी सीमा पर स्थित है। यह सेवा केन्द्र कुचामन रिंगस सड़क मार्ग परस्थित है।

मीण्डा सेवा केन्द्र पर 3 प्राथमिक विद्यालय 1 उच्च प्राथमिक विद्यालय, 1 माध्यमिक विद्यालय, 1 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, 1 प्राथमिक स्वास्थ्य उप केन्द्र, 140 कुऐं 295 विद्युतीकृत कुऐं 1 डाकघर 10 दूरभाष 1 वाणिज्यिक बैंक 1 कृषि सहकारी समिति व 7 छोटी दुकानें स्थित है।

मीण्डा सेवा केन्द्र का संयुक्त केन्द्रीयता सूचकांक 167.75 है तथा इसका क्षेत्रफल 1149 हेक्टेयर व जनसंख्या 4978है।

देवली कला सेवा केन्द्र

अध्ययन क्षेत्र मे यह सेवा केन्द्र तहसील के पूर्वी छोर पर मीण्डा सेवा केन्द्र के पश्चिम में स्थित है। इसके दक्षिण में लुणवा सेवा केन्द्र स्थित है। यह सेवा केन्द्र कुचामन रिंगस सड़क मार्ग पर स्थित है।

देवली कला सेवा केन्द्र पर 4 प्राथमिक विद्यालय, 1 उच्च प्राथमिक विद्यालय, 1 माध्यमिक विद्यालय, 1 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, 1 प्राथमिक स्वास्थ्य उप केन्द्र, 259 कुऐं 615 विद्युतीकृत कुऐं, 1 डाकघर, 1 दूरभाष, 1 सहकारी वाणिज्यिक बैंक, 1 कृषि सहकारी समिति, 1 अकृषि सहकारी समिति व 10 छोटी दुकानें स्थितहै।

इस सेवा केन्द्र का संयुक्त केन्द्रीयता सूचकांक 149.95 है। इस सेवा केन्द्र का क्षेत्रफल 1610 हैक्टेर व जनसंख्या2941 है।

निष्कर्ष

उपयुक्त शोधपत्र में नावां तहसील के ग्रामीण समन्वित विकास के सेवा केन्द्रों का विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में विकास केन्द्रों, विकास केन्द्रों के निर्धारण की प्रयुक्त विधियों, कार्यात्मक पदानुक्रम की विधियों तथा सेवा केन्द्रों का विश्लेषण किया गया है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *जगदीश गहलोत (1980), "राजस्थान का सामाजिक जीवन'हिन्दी साहित्य मंदिर, जोधपुर।*
2. *बी. एन. दाउदयाल (2012) "राजस्थान जिला गजेटियर'जयपुर।*
3. *बसंत मोघे (2011), "राजस्थान में कृषि उत्पादन" राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।*
4. *जिला सांख्यिकी रूपरेखा (2011) जिला-नागौर।*
5. *भारतीय जनगणना विभाग, राजस्थान जयपुर।*